प्रश्नपत्र - IV

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

B.A. - III

डॉ. राम नारायण मिश्र
दर्शनशास्त्र विभाग
एस० बी० कालेज
आरा.

Cogito Ergo Sum

"मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ"

भूमिका :

देकार्त का यह सिद्धांत आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए है। देकार्त एक संदेहवादी दार्शनिक हैं। संदेह का प्रयोग उन्होंने दर्शन के एक आधारभूत तत्व की खोज के लिए किया है। इस प्रकार संदेह उनका एक साध्य है, साधन नहीं है। इस कारण दर्शन के अन्य संदेहवादियों जीनों, सोफिस्टों, ह्यूम आदि से भिन्न हैं।

तर्क :

देकार्त अपने इस सिद्धांत को प्रतिष्ठित करने के लिए मुख्यतः तीन प्रकार के तर्कों का सहारा लेते हैं। यों कहें कि वो संसार के सभी चेतन-अचेतन वस्तुओं के अस्तित्व पर सन्देह करते हैं इस क्रम में सन्देह कर्ता तक पहुँचते हैं।

उनके अनुसार " अभी तक मैं जिसे सर्वथा सत्य और नित्यात्मक मानते आया हूँ

यह ज्ञान मुझे या तो इन्द्रियों से साक्षात मिला है या इन्द्रियों के द्वारा। किन्तु इन्द्रिया कई बार धोखा दे जाती हैं। और इस आधार पर उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान को निश्चायक एवं विश्वसनीय नहीं माना जा सकता। जैसे इन्द्रियों से दूर की वस्तु छोटे आकार की एवं नजदीक की वस्तु बड़े आकार की दिखलाई पड़ती है। फिर भ्रम भी एक वास्तविक सच्चाई है जो जो इन्द्रियों द्वारा प्रदत्त हो अतः इन्द्रिय ज्ञान अविश्वसनीय है।

देकार्त इस प्रत्यक्ष जाग्रत विश्व में कहते हैं कि यह जगत यद्यपि देखने में प्रत्यक्ष लगता परंतु स्वप्न एवं जाग्रत जगत की सत्ता में कोई भेद प्रतीत नहीं होता। स्वप्नावस्था में स्वप्नील वस्तुएं भी वास्तविक प्रतीत होती है। अतः ये सकता है कि यह जाग्रत जगत भी दीर्घकालिक स्वप्न के समान हो।

देकार्त तीसरा तर्क यह देते हैं कि मेरा पुराना विश्वास रहा है कि ईश्वर है और यह सृष्टि ईश्वर द्वारा बनाई गई है। उन्होंने मुझे उत्पन्न किया है और साथ ही साथ हमारी चारों ओर की वस्तुएं भी उसी

Scanned with CamScanner

उसी ईश्वर द्वारा बनाई गई है। और उसके द्वारा बनाई गई सभी वस्तुएं मंगलमय और शुभ हैं। परंतु यह भी हो सकता है कि यह कार्य कि जगत वास्तविक है क्योंकि ईश्वर स्रष्टा है और हमारी चारों ओर की वस्तुएं यथार्थ ~~सत्य~~ हैं। ऐसा मानने के लिए किसी शैतान द्वारा मुझे विवश किया जा रहा हो। यह कार्य शैतान द्वारा किया गया हो।

देकार्त का कहना है कि यदि सभी विचारों पर सभी वस्तुओं पर सन्देह किया जाय तो एक अवस्था ऐसी आती है कि विचार करने वाला अथवा जिसके द्वारा विचार की क्रिया की जा रही है उसके अस्तित्व पर अविश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि वह अस्तित्ववान है तभी कोई क्रिया कर रहा है तभी विचार कर रहा हो कोई अचेतन या अनस्तित्वान है वह कोई क्रिया कैसे कर सकता है। अतः सोचने वाले की सत्ता आवश्यक रूप माननी पड़ेगी। उसका निराकरण करना व्याघाती होगा।

Scanned with CamScanner

चूंकि यह सोचने का कार्य आत्मा द्वारा की जाती है इसलिए आत्मा की सत्ता आवश्यक रूप से माननी पड़ेगी। आत्मा की सत्ता निश्चित रूप से अप्रमाण्य है "मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ। मैं सोचता हूँ इसलिए मेरा अस्तित्ववान हूँ।

भारतीय दर्शन में इस प्रकार के तर्कों का प्रयोग वेदान्त दर्शन में शंकराचार्य के द्वारा किया गया था। उन्होंने कहा था "चिन्तयामि अहमस्मि" य एव हि निराकर्ता तदेव तस्य स्वरूपम्" अर्थात आत्मा के निराकरण से भी उसकी सत्ता प्रमाणित होती है।

समीक्षा :

देकार्त इस प्रकार आत्मा की सत्ता को एक गणितीय आधार प्रदान करते हैं। देकार्त यद्यपि जगत आदि वास्तविक चीजों पर भी संदेह करते हैं जो तार्किक नहीं परंतु वे ऐसा इसलिए करते हैं कि संन्देह की गुंजाइश समाप्त हो जाय। उनका लक्ष्य ऐसा सत्ता/ अस्तित्व को नकारना नहीं रहता।

—0—

Scanned with CamScanner